क्षेत्रीय सर्वेक्षण प्रतिवेदन

गुरूर तहसील का भौगोलिक विश्लेषण
एवं चयनित ग्राम भानपुरी का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन

सत्र **2023-24**

एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रस्तुत

भूगोल विभाग

प्रस्तुतकर्ता

खिलेश्वरी

एम.ए. भूगोल चतुर्थ सेमेस्टर

अनुक्रमांक – **231040530007**

नामांकन क्रमांक – **HU/123/19001033**

शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय, गुण्डरदेही,

जिला – बालोद (छ.ग.)

क्षेत्रीय सर्वेक्षण प्रतिवेदन

गुरूर तहसील का भौगोलिक विश्लेषण
एवं चयनित ग्राम भानपुरी का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन

सत्र 2023-24

एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रस्तुत

भूगोल विभाग

खिलेश्वरी

निर्देशक
डॉ तृप्ति राजपूत
अतिथि प्राध्यापक भूगोल विभाग
शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय,
गुण्डरदेही, जिला – बालोद (छ.ग.)

प्रस्तुतकर्ता
खिलेश्वरी
एम.ए. भूगोल चतुर्थ सेमेस्टर
अनुक्रमांक – 231040530007
नामांकन क्र. – HU/123/19001033

शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय, गुण्डरदेही,
जिला – बालोद (छ.ग.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि खिलेश्वरी द्वारा प्रस्तुत चयनित क्षेत्र बालोद जिले के गुरूर तहसील के अंतर्गत ग्राम – भानपुरी के भौगोलिक विश्लेषण एवं सामाजिक आर्थिक विशेषताओं पर आधारित सर्वेक्षण सत्र 2023-24 का क्षेत्रीय अध्ययन प्रतिवेदन किया गया है।

उपरोक्त क्षेत्रीय अध्ययन प्रतिवेदन छात्रा के अपने अध्ययन व प्रयत्नों का प्रतिफल है एवं मेरे निर्देशन एवं मार्गदर्शन में कार्य को पूर्ण किया गया है।

06/05/24

डॉ.डी.आर.मेश्राम
प्राचार्य
शासकीय शहीद कौशल यादव
महाविद्यालय, गुण्डरदेही
जिला – बालोद (छ.ग.)

PRINCIPAL
Govt. Shahid Koushal Yadav College
Gunderdehi, Dist.- Balod (C.G.)

निर्देशक
डॉ तृप्ति राजपूत
अतिथि प्राध्यापक, भूगोल विभाग
शासकीय शहीद कौशल यादव
महाविद्यालय, गुण्डरदेही
जिला – बालोद (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग
शास. शहीद कौशल यादव महाविद्यालय
गुण्डरदेही, जिला-बालोद (छ.ग.)

घोषणा पत्र

मैं **खिलेश्वरी** घोषणा करती हूँ, कि शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय, गुण्डरदेही, जिला – बालोद (छ.ग.) के एम.ए.भूगोल चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षा 2023-24 के भौगोलिक एवं सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण प्रतिवेदन बालोद जिले के गुरूर तहसील के अंतर्गत ग्राम – भानपुरी के भौगोलिक एवं सामाजिक आर्थिक विशेषताओं पर आधारित क्षेत्रीय सर्वेक्षण मेरे स्वयं के मौलिक कृति प्रयासों एवं कार्यों का प्रतिफल है, जिसे मेरे द्वारा अतिथि प्राध्यापक, डॉ.तृप्ति राजपूत, भूगोल विभाग के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में पूर्ण किया गया है।

खिलेश्वरी
06/05/24

प्रस्तुतकर्ता
खिलेश्वरी
एम.ए. भूगोल चतुर्थ सेमेस्टर
अनुक्रमांक – 231040530007
नामांकन क्र. – HU/123/19001033

विषय–सूची

	पृष्ठ संख्या
01.छत्तीसगढ़ राज्य का सामान्य परिचय	11–12
02.बालोद जिले का सामान्य परिचय	13–17
03.क्षेत्रीय अध्ययन की प्रस्तावना	18
04.विषय का चयन	19
05.अध्ययन का उद्देश्य	19
06.परिकल्पना	19
07.विधि तंत्र	20
08.आँकड़ों का संकलन	20

(खण्ड –अ)

गुरूर तहसील की भौगोलिक पृष्ठभूमि

	पृष्ठ संख्या
01.अध्ययन क्षेत्र का सामान्य परिचय	21
02.स्थिति एवं विस्तार	21
03.गुरूर तहसील के पौराणिक स्थल	22–23
04.भूवैज्ञानिक संरचना	24
05.अपवाह तंत्र	24
06.जलवायु	25
07.तापमान, वर्षा	26–29
08.मिट्टी	30–33
09.जनसंख्या प्रतिरूप	34–35
10.जनसंख्या भूगोल वितरण एवं घनत्व	35
11.आयु संरचना	36–38
12.भूमि उपयोग	39
13.उद्योग	40
14.यातायात परिवहन के साधन	41
15.जैव विविधता	42–45

(खण्ड –ब)

सर्वेक्षित ग्राम–भानपुरी का भौगोलिक एवं सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण

पृष्ठ संख्या

01.स्थिति एवं विस्तार 47–51

02.उच्चावच

03.जनसंख्या

04.जलवायु

05.तापमान

06.वर्षा

07.मिट्टी

08.वनस्पति

09.अधिवास

10.यातायात

11.बाजार एवं हॉट

12.संचार के साधन

13.ग्राम भानपुरी की संक्षिप्त जानकारी

सर्वेक्षित परिवारों का सामाजिक संरचना

पृष्ठ संख्या

01.सर्वेक्षित परिवारों में जनसंख्या प्रतिरूप 53–54

02.सर्वेक्षित परिवारों की आयु संरचना 55–56

03.सर्वेक्षित परिवारों का आकार एवं प्रकार 57–58

04.सर्वेक्षित परिवारों की वैवाहिक स्थिति 59

05.सर्वेक्षित परिवारों में साक्षरता का स्तर 60–63

06.सर्वेक्षित परिवारों की जातिगत संरचना 64

07.सर्वेक्षित परिवारों की लिंगानुपात 65

08.सर्वेक्षित परिवारों की वस्त्र एवं आभूषण 66

09.सर्वेक्षित परिवारों में रीति रिवाज एवं परम्पराएं 66–67

10.सामाजिक सांस्कृतियाँ 68

11.सामाजिक कुरीतियाँ 69

सर्वेक्षित परिवारों का आर्थिक सर्वेक्षण

	पृष्ठ संख्या
01.जोत का आकार	71–73
02.लॉरेंज वक्र	74
03.व्यवसायिक संरचना (कार्यशील / अकार्यशील जनसंख्या)	75–76
04.शस्य प्रतिरूप	77–79
05.आय–व्यय का स्वरूप	80
06.सिंचित–असिंचित क्षेत्र	81
07.कृषि उपकरणों का उपयोग	82
08.कृषि उत्पादन में सिंचाई के साधनों का उपयोग	83
09.जैविक एवं रासायनिक खाद का उपयोग	84

सर्वेक्षित परिवारों में जीवन की गुणवत्ता

	पृष्ठ संख्या
01.मकानों की स्थिति एवं प्रकार	86–88
02.मकान का स्वामित्व	89
03.आवास में उपलब्ध सुविधाएं	90–91
04.खान–पान की आदतें	92–94
05.स्वास्थ्य व मनोरंजन	95

सर्वेक्षित ग्राम भानपुरी की समस्याएं एवं संभावनाएं

01.सर्वेक्षित ग्राम भानपुरी की समस्याएं एवं संभावनाएं	97
02.सारांश	98–99
03.निष्कर्ष	99–100
04.संदर्भ ग्रंथ सूची	102

01.पारिवारिक अनुसूचि प्रोफार्मा

छत्तीसगढ़ राज्य का मानचित्र

बालोद जिले का सामान्य परिचय

बालोद जिला को 1 जनवरी 2012 को सिविल डिस्ट्रिक के रूप में अधिसूचित किया गया था। हालांकि राजस्व जिले को 10 जनवरी 2012 को घोषित किया गया था। जिला बनने से पहले यह दुर्ग जिले का हिस्सा था। बालोद जिला तांदुला नदी के तट पर बसा शहर है। अविभाजित मध्यप्रदेश के प्रकाशित राजपत्र में बालोद जिला का इतिहास 1000 वर्ष बताया गया है। 2011 की जनगणना अनुसार बालोद जिले का क्षेत्रफल 3527 वर्ग किलोमीटर है। बालोद की जनसंख्या 826165 और जनसंख्या घनत्व 230/वर्ग किलोमीटर व्यक्ति है। बालोद जिले का साक्षरता दर 74.16 है। महिला पुरुष अनुपात यहां पर 1022 महिला प्रति 100 पुरूषों पर है। जिले की जनसंख्या अनुपात दर 2001 से 2011 के बीच 1.09 प्रतिशत रहा है।

स्थिति एवं विस्तार

बालोद जिला छत्तीसगढ़ के आंतरिक दक्षिण भाग जिला है। बालोद उत्तरी अक्षांश और पूर्वी देशांतर स्थित है। बालोद की समुद्र तल से ऊंचाई 324 मीटर है। बालोद रायपुर से 99 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम की तरफ स्थित है। देश की राजधानी नई दिल्ली से 1255 किलोमीटर दक्षिण पूर्वी की तरफ है। बालोद जिले के अंतर्गत 5 तहसील आते हैं, जिसमें दो नये तहसील का निर्माण हुआ बालोद जिले के तहसीलों के नाम डौंडीलोहारा, डौंडी, बालोद, गुरुर, गुण्डरदेही जिसमें दो नये तहसील अर्जुंदा, देवरी बंगला है।

बालोद जिले का इतिहास

बालोद का इतिहास काफी गौरवशाली रहा है। बालोद में 11वीं शताब्दी में कलचुरी राजाओं का शासन था। इसका प्रमाण है इस वंश के शासकों ने यहां महल का निर्माण कराया था, जो कि खंडहर में तब्दील हो चुका है। इस वंश के अंतिम शासक त्रिभुवन शाह थे। उनकी छः रानियाँ थी। पर्वतीय काल में यहां पर स्थानीय गोड़ शासकों का शासन भी रहा है जिले के रूप में स्थापित बालोद मराठा शासन काल में बालोद परगना था। यहां मुगल काल से लेकर राजपूत काल, ब्रिटिश काल व आजादी के हर एक एतिहासिक कड़ियों का प्रमाण है।

बालोद जिले के पौराणिक स्थल

01. महापाषाणी स्मारक स्थल :–

यह बालोद रोड पर मुख्यालय से 15 कि.मी. पर है। यहां महापाषाण स्मारक एवं वृत्ताकार शवधान स्थल एक लंबी श्रृंखला के रूप में विद्यमान है। महापाषाणी संस्कृति के विशाल अवशेषों का समूह मुजगहन से लेकर नवापारा सोरर तक है।

02. गंगा मैया मंदिर :–

छत्तीसगढ़ की बालोद दुर्ग धमतरी मार्ग के पास झलमला में स्थित ऐतिहासिक महत्व का स्थल है। इस मंदिर का गौरवशाली इतिहास है। मूल रूप से गंगा मैया मंदिर का निर्माण बैगा लोगों द्वारा एक छोटी सी पीपल की छांव के नीचे किया गया था।

05. सियादेवी मंदिर :–

सियादेवी मंदिर बालोद ज़िले के गुरूर तहसील में आता है। यह प्राकृतिक जंगल झरने के बीच स्थित सीता मैया मंदिर के लिए यह स्थान प्रसिद्ध है। मंदिर बहुत पुराना है और यहां एक जलप्रपात है।

04. राजा राव पठार :–

वीर मेला छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिले के धमतरी जगदलपुर नेशनल हाईवे का स्थित धमतरी से 15 किलोमीटर दूर स्थित राजाराव पठार पर छत्तीसगढ़ के प्रथम स्वतंत्रता शहीद वीर नारायण सिंह के याद में मनाया जाता है।

05. भोला पठार मंदिर :–

शहर के राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 930 के पर्रेगुड़ा ग्राम से कुछ ही दूरी पर प्रकृति की गोद में एक सुंदर सा पहाड़ है, जिसे भोला पठार के नाम से जाना जाता है। पहाड़ी पर बसे इस मंदिर के प्रति लोगों में काफी आस्था है। इस मंदिर में भोलेनाथ के साथ अन्य देवी–देवताओं की मूर्तियां भी है।

06. माता रानी माई मंदिर :–

माता रानीमाई मंदिर बालोद जिला का प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर बहुत ही पुराना है और यहां की मान्यता भी बहुत अद्भुत है माता रानी देवी 12 गांवों की देवी है। यहां सच्चे मन से जो भी माांगे पूरी होती है। रानी माई माता मंदिर बालोद से 15 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पर्यटन स्थल

01. तांदुला बांध :–

तांदुला बांध बालोद से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। बांध स्थल बड़े जल निकाय के शानदार दृश्य के साथ सुंदर है। यहां से भिलाई स्टील प्लांट को पानी की आपूर्ति की जाती है। इस बांध का निर्माण 1950 से 1912 के बीच पूरा हुआ। तांदुला परियोजना का निर्माण ब्रिटिश अभियंता एडम स्मिथ के मार्गदर्शन में हुआ। तांदुला बांध की अधिकतम ऊंचाई 24.53 मीटर और लंबाई 2906.43 मीटर है।

बालोद जिले का मानचित्र

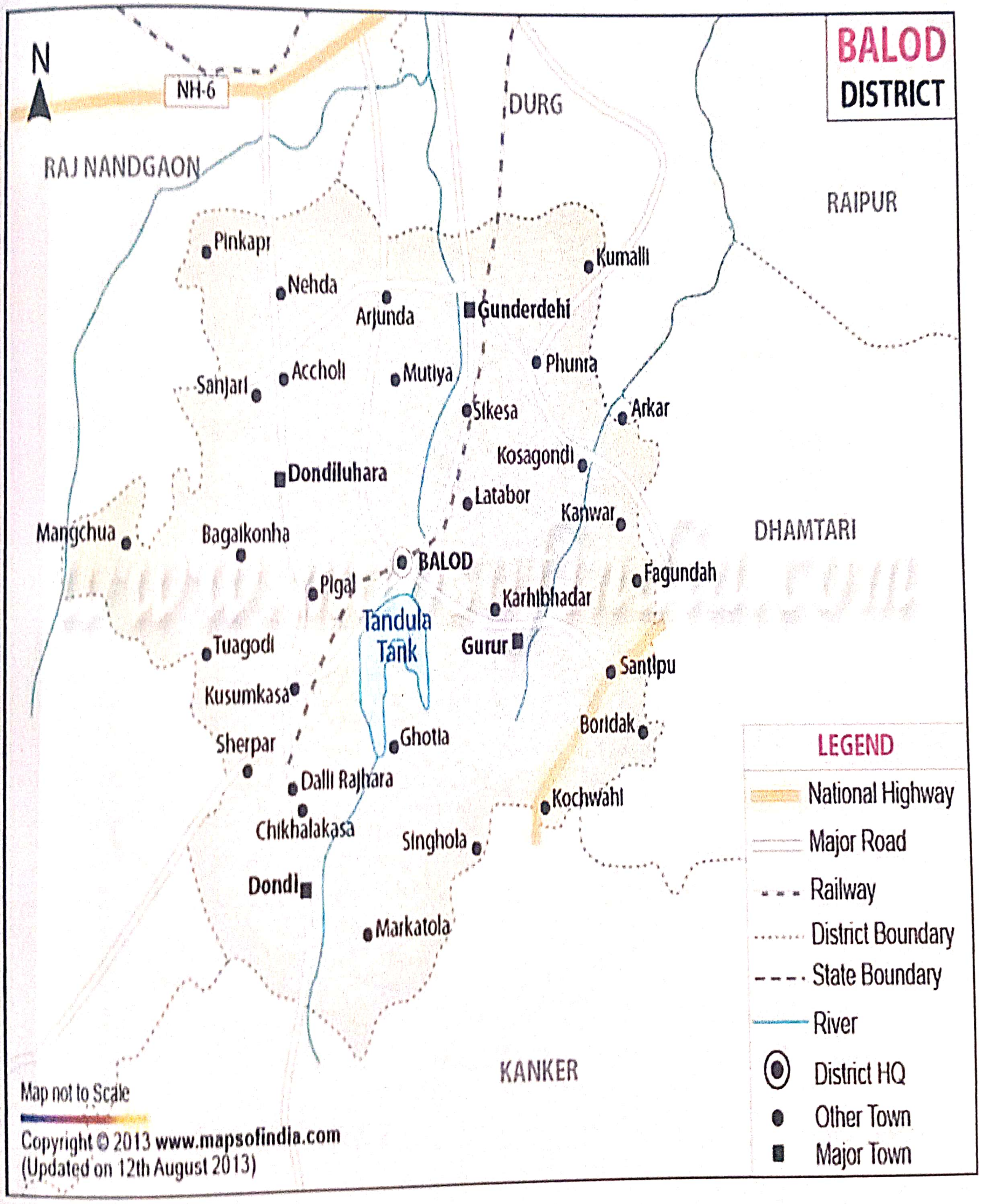

गुरूर तहसील का मानचित्र

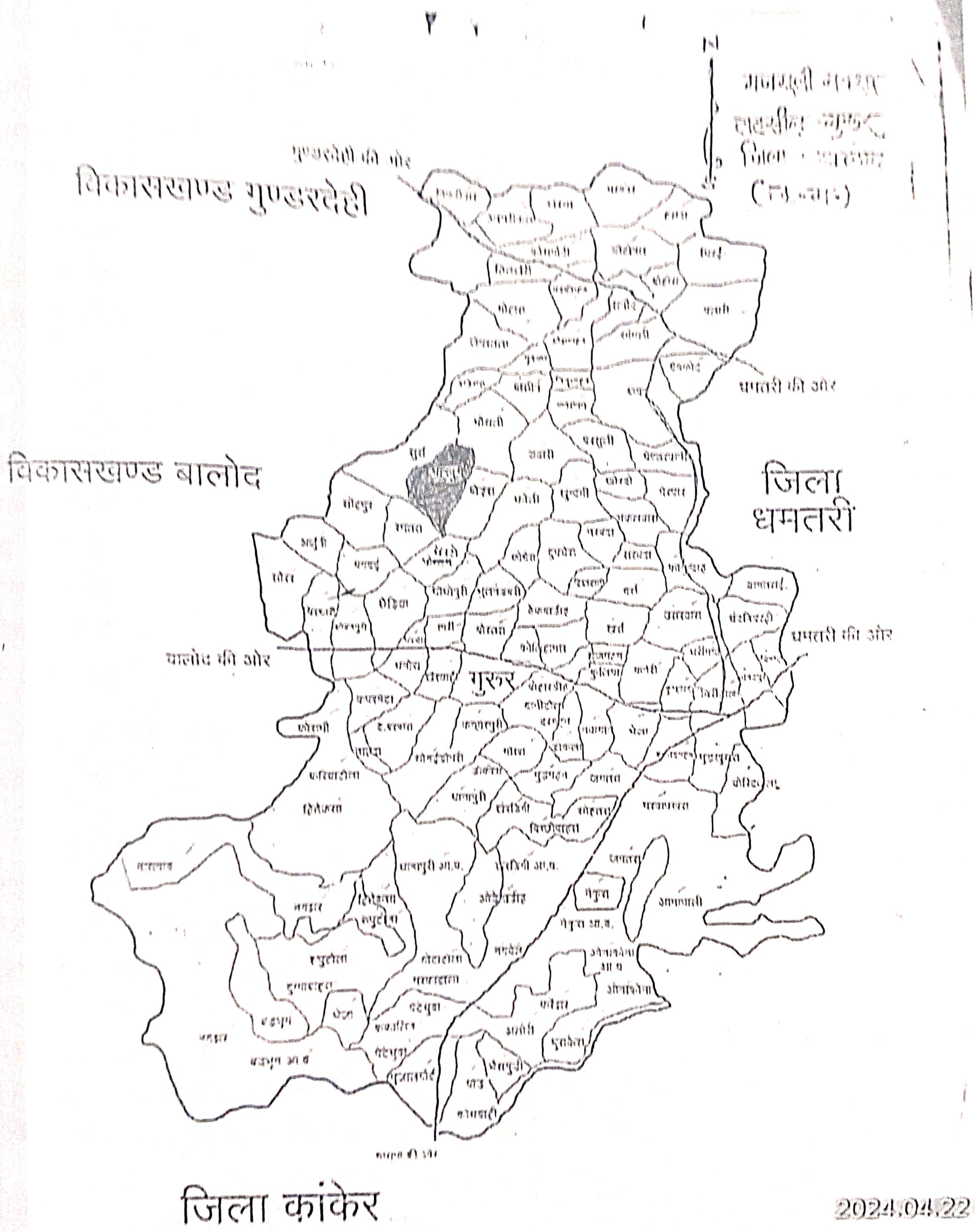

2024.04.22 13

क्षेत्रीय अध्ययन की प्रस्तावना

सर्वेक्षित ग्राम भानपुरी गुरुर से उ.प. दिशा की ओर स्थित है। यह विकासखंड एवं तहसील–गुरुर के जिला–बालोद, छत्तीसगढ़ का प्रशासनिक भाग है। इस ग्राम का विधानसभा क्षेत्र गुरूर है। और लोकसभा क्षेत्र कांकेर है। यह गुरुर थाना के अंतर्गत आता है। इस ग्राम पंचायत में 20 वार्ड हैं। इस प्रकार 20 निर्वाचित पंच है।

प्रस्तुत भौगोलिक सर्वेक्षण बालोद जिले के गुरूर तहसील के प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत स्थित ग्राम–भानपुरी के भौतिक स्वरूप एवं सामाजिक आर्थिक कारकों का मानव पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन से संबंधित है।

भूगोल एक प्रेक्षणात्मक विज्ञान है, क्योंकि प्राचीन काल से ही भूगोल वेत्ताओं ने क्षेत्र का निरीक्षण या परीक्षण करके प्राप्त जानकारी के तथ्यों की व्याख्या की है। निरीक्षण या क्षेत्र अध्ययन का तात्पर्य यह है कि पहले क्षेत्र में तथ्यों का अवलोकन करना और प्राप्त तत्वों के आधार पर वर्णन करना। जब हम भूगोल विषय के विकास पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं, कि प्राचीन यूनानियों ने दूर–दूर देश की यात्राएं की भी अपनी यात्राओं के दौरान किए गए अनुभव को अभिलिखित किया और जहां आवश्यकता पड़ी वहां सर्वेक्षण भी किये। किसी क्षेत्र की भौगोलिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसका क्षेत्रीय अध्ययन आवश्यक है जिसे अपना विशेष महत्व है।

भूगोल एक क्षेत्रीय विज्ञान है। इसी बात के अंतर्गत क्षेत्रीय अध्ययन का अभिन्न अंग बनाया गया है।

भूगोल के विद्यार्थियों के जीवन में क्षेत्रीय अध्ययन का उतना ही महत्व है, जितना कि मनुष्य के लिए भोजन वस्त्र और आवास का। भूगोल के विद्यार्थियों के लिए तो उसका महत्व और अधिक इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकि भूगोल एक जीवित विज्ञान है। विद्यार्थी इस विषय के प्रारंभ से ही प्रकृति की गोद में पहुंच जाता है। जैसे मिट्टी, पर्वत, पठार, मैदान, रेगिस्तान, वनस्पति, चट्टानें भौतिक स्वरूप नदी, झील, झरने एवं सागरो तथा द्वीप आदि विभिन्न सांस्कृतिक पक्षों जैसे कृषि, उद्योग, व्यापार, परिवहन, खनन व अनेक प्रकार के मानवीय क्रियाकलापों का अध्ययन कराया जाता है, परंतु इन तथ्यों के यथार्थ चित्रण के लिए क्षेत्रीय अध्ययन अनिवार्य कर दिया गया है।

गुरूर पौराणिक स्थल

01. कंकालिन मंदिर :–

बालोद जिले के गुरुर ब्लॉक के ग्राम–कनेरी में स्थापित कंकालीन मंदिर में भक्तों की आस्थाएं जुड़ी है। कहते हैं जो भी भक्त इस मंदिर की चौखट पर आया वह खाली नहीं गया मां ने उनकी झोली खुशियों से भर दी। यहां विराजित कंकालिन देवी के आशीर्वाद से हर संकट दूर हो जाता है। हर बिगड़ी बन जाता है, जो भक्त देवी को सच्चे मन से पूजते हैं, उन भक्तों की मुराद जरूर पूरी करते हैं। मां अपने भक्तों के सभी कष्ट दूर कर देते हैं। इस गांव में मंदिर से भक्त और देवी मां के बीच आस्था और विश्वास का अनूठा बंधन देखने को मिलता है।

कंकालिन मंदिर

02. ओनाकोना मंदिर :—

ओनाकोना मंदिर बालोद के गुरूर तहसील के अंतर्गत आता है। यहां पर भगवान शिव को समर्पित मंदिर है। ओनाकोना मंदिर m.s. 30 मार्ग से बस्तर मार्ग में रायपुर से लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर है। धमतरी से 35 किलोमीटर की दूरी पर और बालोद से 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ओनाकोना मंदिर ओनाकोना गांव में ही स्थित है। इस मंदिर को धमतरी के किसी व्यापारी के द्वारा बनाया गया है। कई सालों से यह मंदिर बंद रहा है। यह मंदिर अभी तक पूरा नहीं हुआ है। देखने से यह मंदिर बहुत पुराना दिखता है, लेकिन यह मंदिर कुछ साल पहले बना है। मंदिर के साथ—साथ यहां पर एक मस्जिद भी बन रहा है। गांव वाले बताते हैं कि यहां पर बहुत साल पहले सूफी संत बाबा फरीद आए थे, और यहां पर कुछ समय गुजारे. थे। इसलिए यहां पर मस्जिद भी बनाए थे। इसके अलावा यहां पर राम भगवान की मूर्ति भी है। ओनाकोना गंगरेल बांध का एक छोर है। यह गंगरेल बांध का टूone क्षेत्र है। यहां पर हमेशा पानी रहता है। इस मंदिर को ताम्रकेश्वर मंदिर भी कहा जाता है।

ओनाकोना मंदिर

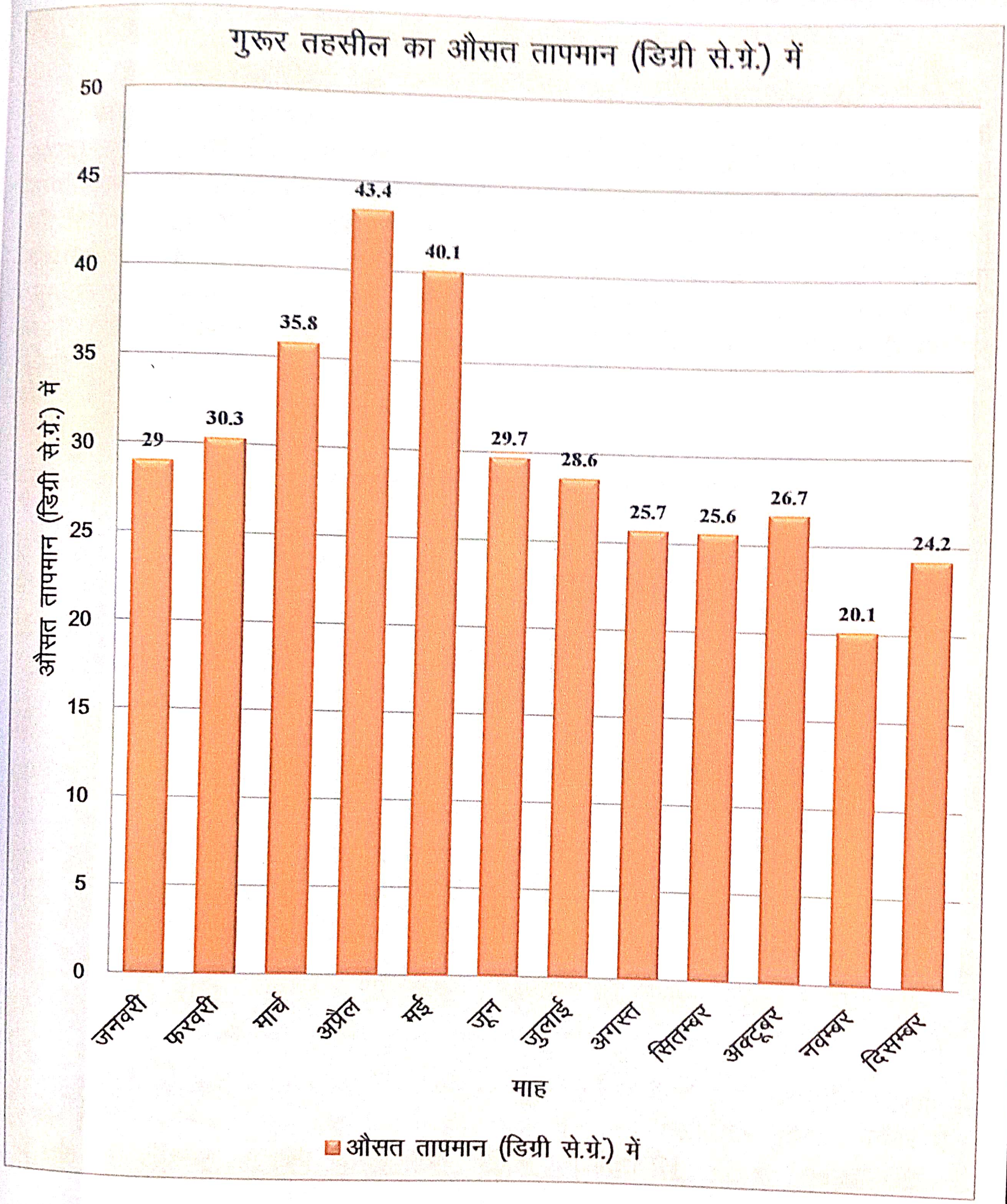

गुरूर तहसील का औसत तापमान (डिग्री से.ग्रे.) में
50
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0
औसत तापमान (डिग्री से.ग्रे.) में
29
30.3
35.8
43.4
40.1
29.7
28.6
25.7
25.6
26.7
20.1
24.2
जनवरी
फरवरी
मार्च
अप्रैल
मई
जून
जुलाई
अगस्त
सितम्बर
अक्टूबर
नवम्बर
दिसम्बर
माह
औसत तापमान (डिग्री से.ग्रे.) में

जातिगत संरचना

जाति भारतीय समाज की प्राचीन संख्या है। भारतीय समाज प्रमुख रूप से जाति प्रधान समाज है। कोई भी समाज में चाहे वह आदिम हो या आधुनिक शिक्षित हो या अशिक्षित किसी न किसी प्रकार का स्तरण पाया जाता है। समाज में विभिन्न प्रकार की जाति यं जनजाति निवास करते हैं। प्रत्येक जाति की अपनी–अपनी विशेषताएं हैं जाति सामाजिक अवस्था में प्रसास्ति निर्धारण करने का महत्वपूर्ण आधार है।

01. कुले के अनुसार :–

"जब एक वर्ग अनुवांशिकता पर आधारित होता है, तो उसे हम जाति कहते हैं। पूर्णतः जाति जन्म पर आधारित होता है जिसे कोई भी व्यक्तिक गुणों में वृद्धि करके अथवा परिवर्तन करके भी नहीं बदल सकता। जिस जाति में व्यक्ति का जन्म होता है, वह जीवन भर उसी जाति का सदस्य रहता है।"

सर्वेक्षित ग्राम में जातिगत संरचना

ग्राम भानपुरी में 52 परिवारों में अन्य पिछड़ा वर्ग के ही 52 परिवार निवास करते हैं।

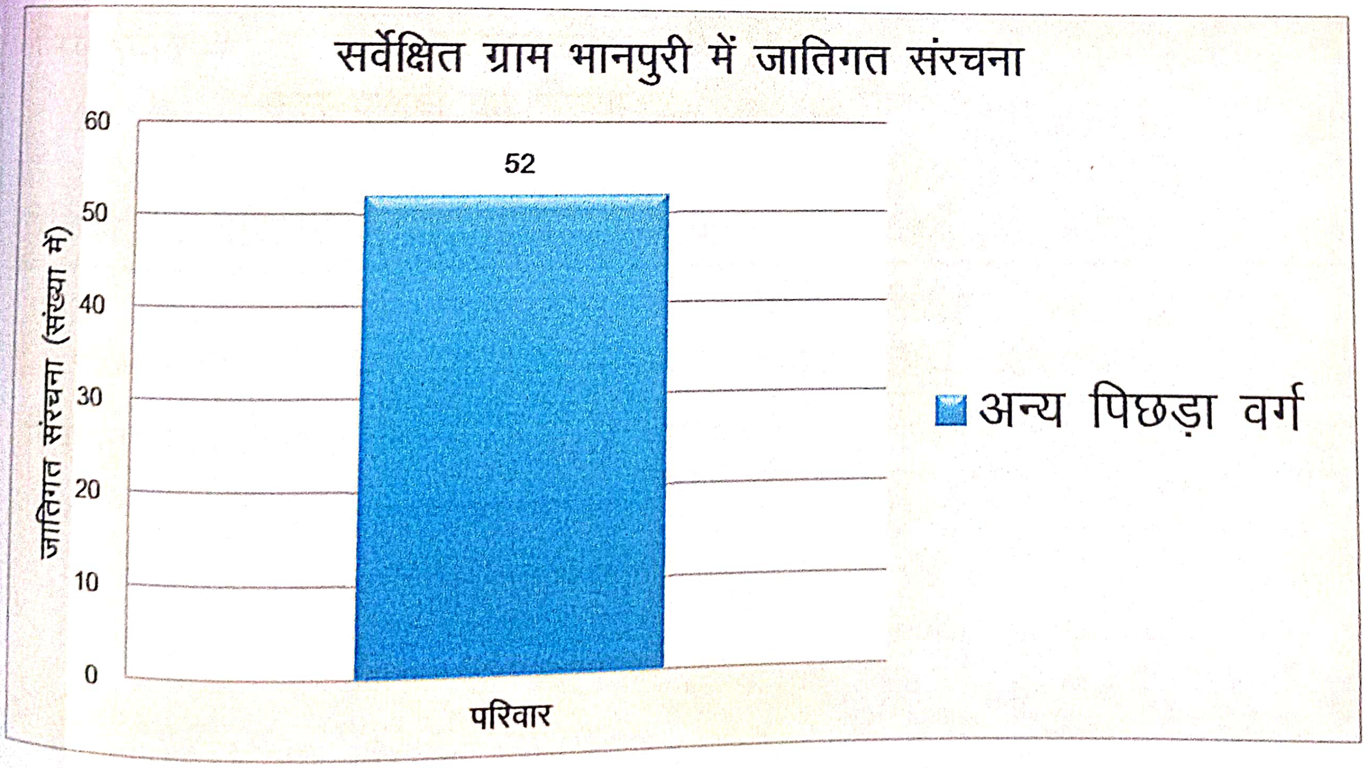

कृषि उपकरणों का उपयोग

सर्वेक्षित ग्राम भानपुरी में आज परम्परागत तरीके से कृषि की जाती है। यहां कृषि के लिए आधुनिक यंत्रों का प्रयोग अधिक किया जाता है तथा ट्रेक्टर से ही अधिकतर गांव की खेती किया जाता है। यहां अधिकतर बोवाई एव रोपाई विधि का प्रयोग किया जाता है। कृषि कार्य अधिकतर मशीनों के द्वारा किया जाता है। खेतों की जुताई के लिए ट्रैक्टर का उपयोग किया जाता है। मिंजाई के लिए ट्रैक्टर, हार्वेस्टर जैसे मशीनों का उपयोग किया जाता है। अधिकांश कृषि कार्य ट्यूबवेल के माध्यम से किया जाता है।

सारणी क्रमांक 3.6
सर्वेक्षित ग्राम भानपुरी में कृषि उपकरणों का उपयोग

	बिजली पंप	ट्यूबवेल	ट्रेक्टर	उड़ावनी पंखा	थ्रेसर	हार्वेस्टर	अन्य	योग
कृषक संख्या	6	8	41	2	41	40	0	138
प्रतिशत	4.34	5.79	29.71	1.44	29.74	28.98	0	100

स्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2024

सर्वेक्षित ग्राम भानपुरी में 6 किसान बिजली पंप का उपयोग करते हैं एवं 8 लोगों के पास ट्यूबवेल की सुविधा है, जिसमें सिंचाई किया जाता है। इस गांव के लोग धान की कटाई के लिए हसिया के द्वारा कटाई किया जा रहा है तथा इस गांव में 29.74 प्रतिशत लोगों के पास थ्रेसर तकनीकी साधन उपलब्ध है। आज इस गांव में अधिकतर धान मिंजाई का काम थ्रेसर व ट्रैक्टर के द्वारा किया जाता है। यहां ट्रैक्टर 29.71 प्रतिशत लोगों के पास उपलब्ध है। आज का युग परिवर्तन तथा विज्ञान का युग माना जाता है। अब धीरे–धीरे तकनीक का परिवर्तन हो रहा है तथा अब मिंजाई तथा जुताई के लिए ट्रैक्टर का प्रयोग किया जाता है। तथा धन की ओसाई के लिए 1.44 प्रतिशत परिवार उड़ावनी पंखा का उपयोग करते हैं। आज बड़ी मात्रा में आधुनिक तकनीक का उपयोग करते जा रहे हैं। आज थ्रेसर, ट्रैक्टर इत्यादि साधनों का प्रयोग करते हैं, जिसमें कम समय में अधिक काम किया जा सकता है।

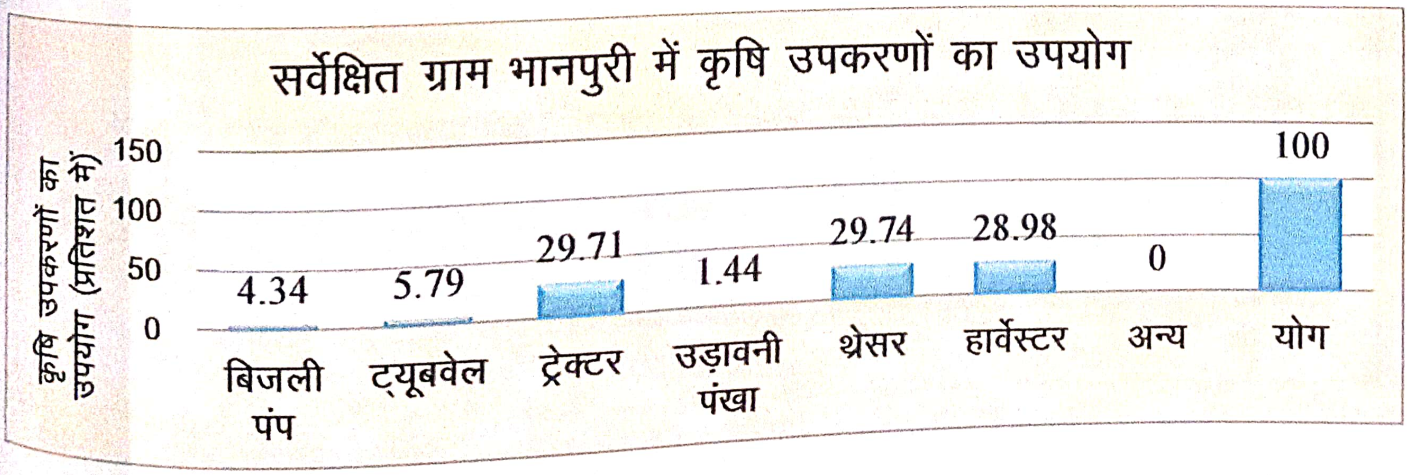

संदर्भ ग्रंथ सूची

01. गौतम अल्का (2017) : कृषि भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

02. मौर्य एस.डी. (2005) : जनसंख्या भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद

03. नेगी पी.एस. (2009) : परिस्थिति एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ

04. होता जितेंद्र कुमार (2014) : जैव भूगोल एवं पारिस्थितिक, शताक्षी पब्लिकेशन

05. मौर्य एस.डी. (2005) : सामाजिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

06. मौय एस.डी. (2016) : अधिवास भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

07. सविंद्र सिंह (2018) : पर्यावरण भूगोल का स्वरूप, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद

08. मामेरिया एवं गुप्ता (2017) : भारत का वृहद भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, इलाहाबाद

09. सिंह सविन्द्र (2017) : जलवायु विज्ञान, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद

10. चांदना आर.सी. (2019) : जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिकेशन, लुधियाना

11. बी.पी. एवं वर्मा एल.एन. (2016) : जनसंख्या भूगोल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

12. प्रो. एम.एल. गुप्ता एवं डॉ.डी.डी.शर्मा (2010) : समाज शास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा

13. त्रिपाठी संजय एवं त्रिपाठी श्रीमती वंदन, छ.ग. वृहद संदर्भ, उपकार प्रकाशन, आगरा–2